जीवन भर गरीब की आवाज बने रहे मूलचंद

संस्मरण

- स्वतंत्रता सेनानी बाबू मूलचंद जैन के प्रयासों से बना लाइब्रेरी निदेशालय

अश्विनी शर्मा, करनाल

स्वतंत्रता सेनानी बाबू मूलचंद जैन ने गांधीवाद की अलख जीवन भर जलाकर रखी। उन्होंने अहिंसा की राह पर डटकर गरीबों और शोषितों की आवाज बुलंद की। आजादी के आंदोलन में कई दफा जेल गए और हर बार सजा काटने के बाद और ज्यादा सक्रियता से आंदोलन को चलाया। उनकी हरियाणा के उत्थान में अदा की गई भूमिका को भी हमेशा याद रखा जाएगा। वह पूरे प्रदेश में पुस्तकालय आंदोलन लाना चाहते थे। इसकी शुरूआत उन्होंने अपने आवास पर आदर्श पुस्तकालय की स्थापना करके की।

बाबू मूल चंद जैन का जन्म सोनीपत जिले के गोहना कस्बे के सिकंदरपुर माजरा में 20 अगस्त 1915 को निम्न मध्यमवर्गीय परिवार में हुआ। उनका निधन 12 सितंबर 1997 को करनाल स्थित आवास पर हुआ। वह शिक्षा में होनहार थे। वह 1936 में पंजाब विश्वविद्यालय लाहौर की विधि परीक्षा में अव्वल रहे। 1937-38 में गोहाना से वकालत शुरू की और बाद में स्वतंत्रता आंदोलन में कूद पड़े। इसी वर्ष वह जमींदारा लीग द्वारा कांग्रेस के जलसे को कामयाब नहीं होने देने की मुहिम के तहत रोहतक जिले के असौदा गांव में जमींदारा संघ के कार्यकर्ताओं के हमले में गंभीर रूप से घायल हो गए।

Downloaded from moolchandjain.org

उन्होंने सत्याग्रह आंदोलन में भाग लिया। इसके तहत छह मार्च 1941 को अपने गांव की चौपाल में गिरफ्तारी दी। उन्हें अंग्रेजों ने एक साल का कठोर कारवास दिया। जनवरी 1942 में वह करनाल आए। उन्होंने भारत छोड़ा आंदोलन के तहत 11 अगस्त 1942 को उन्हें दोबारा गिरफ्तार कर मुलतान जेल भेजा गया। यहां से रिहा होने के बाद और सक्रियता से आजादी के आंदोलन में भाग लिया। आजादी हासिल नहीं होने तक वह स्वतंत्रता की मुहिम में शामिल रहे। आजादी के बाद वह करनाल जिला कांग्रेस के महासचिव चुने गए और इसके बाद जिलाध्यक्ष का दायित्व भी संभाला। 1952 में वह संयुक्त पंजाब में समालखा विधानसभा सीट से विधायक चुने गए। 1977 में वह समालखा विधानसभा से फिर विधायक बने और उन्हें जनता पार्टी सरकार में वित्त मंत्री का पद मिला। 1980 की शुरूआत में वह विधानसभा में विपक्ष के नेता बने। इसके अलावा वह सरकार के कई पदों पर रहे। 1987 में देवी लाल की सरकार में उन्हें राज्य योजना बोर्ड का उपाध्यक्ष बनाया गया। इस पद से इस्तीफा देने के बाद वह सक्रिय राजनीति से लगभग दूर हो गए और मानवीय मूल्यों व नैतिक शिक्षा के लिए कार्य करने लगे। उन्होंने प्रदेश में पुस्तकालय आंदोलन चलाना चाहा और इसकी शुरूआत अपने पैतृक गांव सिंकदरपुर माजरा में आदर्श पुस्तकालय की स्थापना से की। उनके प्रयासों से ही प्रदेश में अलग लाइब्रेरी निदेशालय बनाया गया। उन्होंने प्रदेश में शराबबंदी भी सक्रिय भूमिका अदा की।